International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 26-27

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 26-27
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 5-04-2015
Accepted: 30-04-2015

आसुतोष सती
शोध छात्र, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence
आसुतोष सती,
शोध छात्र, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ईशावास्योनिषद् में विद्यमान आदर्श वाक्यों की प्रासंगिकता

आसुतोष सती

प्रस्तुत विषय के विवेचन क्रम में शुक्लयजुर्वेद के काण्वशाखीय ईशावास्योपनिषद् के पाठ को आधार बनाया गया है। उपनिषदों में ईशावास्योपनिषद् अन्यतम है। जिसमें अट्ठारह मन्त्र उपलब्ध होते हैं। यद्यपि सभी मन्त्र संस्कृत वाङ्-मय में आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हैं, तथापि प्रस्तुत पत्र में लौकिक दृष्टि से प्रासंगिक बिन्दुओं पर विचार किया जा रहा है। यहाँ यह भी विचारणीय है कि आचार्य शंकर ने ईशावास्योपनिषद् का चरमोद्देश्य आत्म तत्त्व का प्रतिपादन माना है।[1]

ईशावास्योपनिषद् के अनेक भाष्य प्राप्त होते हैं। जिनमें अनेक दृष्टियों से मन्त्रार्थ किया गया है। मन्त्रों में आयी सूक्तियों की वर्तमान समय में उपयोगिता को देखना का प्रयास किया जा रहा है।

ईशावास्योपनिषद् के प्रथम मन्त्र में परमात्मा की सर्वव्यापकता तथा त्याग का उपदेश उपलब्ध होता है। द्वितीय मन्त्र में कर्म मार्ग का प्रतिपादन किया गया है। इसी प्रकार प्रस्तुत उपनिषद् में अज्ञान की निन्दा, आत्मा का स्वरूप, विद्या-अविद्या, सम्भूति-असम्भूति आदि विषयों पर तात्त्विक विवेचन प्राप्त होता है।

उपनिषद् के दो मन्त्रों में प्रयुक्त सूक्तियों को लोभ के परित्याग के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। मा गृधः कस्य स्विद्धनम् तथा हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

वर्तमान में देखा जाता है कि उच्च पदों पर आसीन अधिकारी, राजनेता आदि लोभ में आकर पद से च्युत हो जाते हैं जिसका फल सर्वथा अनिष्ट कार्य ही होता है। यह लोभ प्रगति पथ पर बाधा है। इस सन्दर्भ में 'मा गृधः कस्य स्विद्धनम्'[2] यह सूक्ति विशेष उल्लेखनीय है। जिसमें सभी प्रकार के लोभ का निषेध किया गया है।

भौतिक वस्तुएँ ही हमें पारमार्थिक प्रतीत हो रहीं हैं जबकि यथार्थ में वे क्षणभंगुर और नश्वर है। और मनुष्य उन क्षणिक वस्तुओं को ही सत्य मान रहा है। जिससे यथार्थ सत्य का स्वरूप अनित्य व सारहीन पदार्थों से आवृत्त हो चुका है। इस सन्दर्भ में 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यापिहितं मुखम्..'[3] मन्त्र को देखा जा सकता है। जिसमें पूषन् देवता से सत्य ज्ञान को प्राप्त करवाने की प्रार्थना की गयी है।

किसी भी कार्यसिद्धि के लिये नियमित तथा निरन्तर कार्य करने की अवश्यकता नितरां आवश्यक होती है। जिसको शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक यहाँ तक की जन सामान्य भी स्वीकार करता है। जिसका उपदेश वैदिक तथा लौकिक साहित्य में बहुधा देखने को मिलता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत उपनिषद् में उपदिष्ट मन्त्र

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः,
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥२॥

अत्यन्त प्रासंगिक है। उल्लेखनीय है की प्रस्तुत मन्त्र में शांकरभाष्य में कर्माणि का अर्थ अग्निहोत्रादीनि रूप में किया है। जो अध्यात्म परक है। सामान्यतः कर्माणि शब्द का लौकिक दृष्टि से अर्थ श्रेष्ठ कर्म है। और मन्त्र में प्रयुक्त शतं शब्द आयु का पर्याय है। अतः कर्ममार्गी के लिये सम्पूर्ण आयु पर्यन्त श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीने की इच्छा के अतरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है, जिससे की कर्म बन्धन कारक न हों। इस प्रकार कह सकते हैं की कर्म मार्ग का उपदेश ईशावास्योपनिषत् का सार है। जो निरन्तर नियमित कर्म करने के लिये प्रेरित करता है [4]। यह उपदेश मनुष्य को अपने लक्ष्य प्राप्ति करने के लिये मार्ग प्रशस्त करता है।

सम्प्रति समाज में ऊँच-नीच,लोभ,ईष्या आदि की भावना को सभी प्राणियों में देखा जा सकता है। यहीं हमारे दुःख,कष्ट तथा निराशा का कारण है। जिसके निदान हेतु उपनिषत्कार आत्मा की व्यापकता का प्रतिपादन करके समत्व पर विचार करते हैं।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥ [5]

इस उपदेश को आत्मसात् करने से आतंकवाद तथा भ्रष्टाचार जैसी वैश्विक समस्या को पृथिवी से दूर किया जा सकता है।

शिक्षाशास्त्रियों ने आत्मनिरीक्षण विधि को श्रेष्ठ विधि माना है। जिसके निरन्तर प्रयोग से अपनी दिनचर्या,आचार तथा व्यवहार को उत्तम बनाया जा सकता है। इस प्रसंग में उपनिषत् का मन्त्र प्रासंगिक है।

ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर।।[6]

उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत मन्त्र का क्रम यद्यपि मरणोन्मुख उपासक की याचना करते हुए अपने किये हुए का बार बार स्मरण रूप में प्राप्त होता है। तथापि मन्त्र के उत्तरार्ध भाग को सूक्ति रूप में देखा जा सकता है। जिससे अपने द्वारा किये गये क्षण क्षण के कार्यों का पुनः पुनः निरीक्षण किया जा सकता है। निरीक्षण से अपने दोंषों को दूर करने के उपाय भी खोजे जा सकते हैं।

उपनिषद् के अन्तिम मन्त्र में सुपथ मार्ग पर चलकर धन, कर्मफलों को प्राप्त करने की प्रार्थना की गयी है। 'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्' [7] मन्त्र में की गयी प्रार्थना आज समाज के लिये ग्राह्य है। यह हमारे लिये सन्देश है कि सुपथ (सदाचार) पर चलकर और श्रेष्ठ कर्म करके ही धन प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि उपनिषद् में विद्यमान मन्त्र व सूक्तियाँ आधुनिक समाज को अनुकूल कार्य करने के लिये प्रेरित करते हैं त्याग भाव पूर्वक लोभ भावना का निराश करते हैं, सभी प्राणियों के प्रति समान व्यवहार करने का आदर्श प्रस्तुत करते है। लौकिक और अलौकिक उभयविध विद्याओं को जानकर अमृत (दैवत्त्व) को प्राप्त करने की विचारणा करते हैं। आत्मनिरीक्षण करके उत्तम आचार व्यवहार करने पर बल देते हैं तथा सुपथ पर चलकर कर्म करने का मार्ग बताते हैं।।

1. *ईशावास्यमित्यादयो मन्त्राः कर्मस्वविनियुक्तास्तेषामकर्मशेषस्याऽऽत्मनो याथात्म्यप्रकाशकत्वात्। शांकरभाष्य ।*
2. *ईशा. १*
3. *ईशा. १५*
4. *कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः, एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे। ईशा. २,*
5. *ईशा. मन्त्र ६*
6. *ईशा. मन्त्र १७*
7. *ईशा. १८*